

## विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

## घरेलू काम करने वाली महिलाओं का अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान

यू एन वीमेन और यूनाइटेड नेशंस डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक एंड सोशल अफेयर्स ने अपनी एक ताजा रिपोर्ट में खुलासा किया है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता की खाई अभी भी बहुत गहरी है, जिसे भरना इतना आसान नहीं है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में प्रगति हुई है मगर वह बेहद धीमी है। भारत में महिलाओं के सामने सबसे बड़ा चुनौतीपूर्ण मुद्दा है लैंगिक भेदभाव है। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दुनिया में हर जगह प्रचलित है। महिलाएं आज भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। महिलाएं पुरुष की तुलना में बेहद संकुचित क्षेत्र में चारदीवारी के भीतर ही रहती आई हैं। हाल ही में एक रिसर्च में पता चला है कि घरेलू काम करने वाली महिलाएं अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान देती हैं, लेकिन फिर भी उन्हें इसका कोई श्रेय नहीं मिलता। घर और समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेदभाव से पीड़ित होती हैं। महिला और पुरुष समाज के मूल आधार हैं। समाज में लैंगिक असमानता एक बहुत बड़ी खाई है, जिससे समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल हो जाता है। जहाँ तक लैंगिक समानता की बात है स्त्री-पुरुष में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। लैंगिक समानता का अर्थ है हर क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान अवसर प्रदान करना, चाहे वह कार्यस्थल हो, अर्जित वेतन हो, या प्रदान किए गए अवसर हों। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, अनुच्छेद 15, अनुच्छेद 16 और अनुच्छेद 39 कुछ महत्वपूर्ण अनुच्छेद हैं जो समानता की अवधारणा से संबंधित हैं। वैयक्तिक और अनपेक्षित असमानताएं इन इंडिया नाम की एक रिसर्च रिपोर्ट में भारत में घर के काम की आर्थिक कीमत का आकलन किया गया है। रिसर्च के आंकड़े बताते हैं कि महिलाएं रोजाना सात घंटे से अधिक समय बिना वेतन के घरेलू और देखभाल के काम में लगाती हैं। नौकरपेशा महिलाएं भी करीब 5 से 8 घंटे इसी तरह के कामों में लगाती हैं। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद वर्तमान भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप में व्याप्त है। इसके कारण महिलाओं को आज भी एक जिम्मेदारी समझा जाता है। महिलाओं को सामाजिक और पारिवारिक रुढ़ियों के कारण विकास के कम अवसर मिलते हैं, जिससे उनके व्यक्तिगत विकास नहीं हो पाता है। हालांकि हमारे देश में महिला बराबरी के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई है मगर वह नाकामि है। समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 2023 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि 6 साल से ऊपर की उम्र के लोग रोजाना औसतन 432 मिनट, यानी करीब 7.2 घंटे, बिना वेतन के घरेलू कामों में बिताते हैं। इस अध्ययन में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले काम की कीमत लगभग 22.7 लाख करोड़ रुपये आंकी गई है, जो भारत की जीडीपी का करीब 7.5 प्रतिशत है। एक सर्वे के मुताबिक वेतन से लेकर परमोशन के दौरान महिलाएं भेदभाव का शिकार हो रही हैं। कामकाजी महिलाओं को साफ तौर पर कहना है लिंगभेद के कारण वे इसकी शिकार हुई हैं। कामकाजी महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है। पारिवारिक जिम्मेदारियों उनके विकास में रोड़ा बन रही है। यह स्थिति दुर्भाग्यजनक है।

महिला जननी है। देखा जाये तो उनकी विशेष परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें अधिक अवसर मिलने चाहिए मगर ऐसा नहीं हो रहा है। पारिवारिक जिम्मेदारियों अधिभार बन गयी है। महिला सशक्तिकरण और बराबरी के तमाम दावों के बावजूद आजादी के लगभग सात दशकों बाद भी समाज में महिलाओं की हालत में कोई खास सुधार नहीं आया है। समाज के नजरिए में भी महिलाओं के प्रति अब तक खास बदलाव देखने को नहीं मिला है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं में बढ़ती शिक्षा के बावजूद देश में आर्थिक मोर्चे पर उनकी भागीदारी में गिरावट आई है। इसकी वजह यह है कि ज्यादातर परिवारों में अब भी महिलाओं को घर से दूर रह कर नौकरी करने की इजाजत नहीं है। घर-परिवार व पति से दूर रह कर नौकरी करने वाली महिलाओं को समाज में अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता। आज के आधुनिक युग में भी पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता खुलेआम देखी जाती है। यह भेदभाव न केवल कार्यस्थलों पर बल्कि अपने घरों में भी पाते हैं। बहुत ही देखा जाता है महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक अवसरों से वंचित रखा जाता है। उन्हें अपनी राय रखने की अनुमति नहीं है और वे अपने घरों तक ही सीमित हैं, जिससे वे पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर हैं। महिला के लिए अपने संवैधानिक अधिकारों के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है, खासकर ऐसे समाज में जहाँ लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के खिलाफ हिंसा अभी भी प्रचलित है। अपने अधिकारों को जानना उन्हें किसी भी प्रकार के अन्याय, दुर्व्यवहार या भेदभाव के खिलाफ खड़े होने और आत्मविश्वास और सम्मान के साथ जीवन जीने के लिए सशक्त बना सकता है। समाज के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण करना भी आवश्यक है, जहाँ हर कोई बिना किसी डर के और एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ रह सके। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार विश्व की समूची संघर्ष में केवल 2 प्रतिशत मालिक महिलाएँ हैं। चल-अचल संपत्ति में भी भारी असमानता है। महिला को हमने चौकी चूल्हे तक सीमित कर रखा है। साथ धूमने, सिनेमा देखने या शॉपिंग पर ले जाने मात्र से महिला को उसके अधिकार नहीं मिल जायेंगे। इसके लिए हमें अपनी संकीर्ण सोच के दायरे से बाहर निकलना होगा। मानसिकता बदलनी होगी। नजरियाँ साफ करना होगा। अपनी और दूसरे की बेटी को एक समझना होगा। ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं को दायम दर्ज की मार से जूझना पड़ रहा है। यूनीसेफ की रिपोर्ट यह बताती है कि महिलाएं नारिकेल प्रशासन में भागीदारी निभाने में सक्षम हैं। यही नहीं, महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बैर किसी भी क्षेत्र में काम ठीक से और पूर्णता के साथ संपादित नहीं हो सकता।

-अतिथि सम्पादक,  
बाल मुकुन्द ओझा,  
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

### राशिफल शनिवार 16 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शनिवार विक्रम संम्वत् 2081, कृत्तिका नक्षत्र सायं 7.28 तक, परिधाय योग रात्रि 11.47 तक, बालव करण दिन 1.25 तक चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति - सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरु-वृष, शुक-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।  
आज स्वार्थसिद्धि योग और अमृतसिद्धि योग सायं 7.28 से सूर्योदय तक है। आज मार्गशीर्ष संक्रांति है। सूर्य वृश्चिक में प्रातः 7.32 से प्रवेश करेगा। पुष्य काल दिन 1.56 तक है पदमक योग सायं 7.28 तक रहेगा।  
श्रेष्ठ चौविधिया - शुभ 8.11 से 9.31 तक, चट 12.11 से 1.32 तक, लाभ-अमृत - 1.32 से 4.12 तक राहुकाल - 9.00 से 10.30 तक, सूर्योदय 6.51 सूर्यास्त 5.32



पंडित अनिल शर्मा

**मेघ** - व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करो। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में मंगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

**सिंह** - व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करो। व्यावसायिक सम्पत्ति बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठिक होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**धनु** - परिवारों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या वैमनस्य के कारण पश्चान्ता हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी।

**वृष** - व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

**कन्या** - अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बने कार्य विमर्श सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

**मकर** - घर-परिवार में शुभ-मंगलिक-धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में अर्थव्यय का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

**मिथुन** - आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। वाणि पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

**तुला** - परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कुम्भ** - परिवार में मंगलिक-धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कर्क** - व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करो। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**वृश्चिक** - परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा। परिवार में मंगलिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। परिवारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

**मीन** - परिवार में शुभ-मंगलिक-धार्मिक-सर्वकारिय कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशासन प्राप्त होगा।

## पुस्तक समीक्षा : बेटुकी दुनिया में तुक की बात



राजेश्वर सिंह

लोकेश कुमार सिंह साहिल के गजल संग्रह तुक की गजलों के सीमित दायरे में लगभग समूचा जीवन अपने अछोर विस्तार और असीम गहराई के साथ मौजूद है। यहाँ जीवन है, जीवन का उद्देश्य है, उद्देश्य की साधना है, सिद्धि का उत्सव है, पराजय का स्वीकार है, प्रणय की अभिलाषा है, विरह का विषाद है, अपनत्व का आनन्द है, सम्बन्धों का निर्वहन है और अकेलेपन की गरिमा है।

यहाँ स्व और पर के परे जाकर सम्पूर्ण सृष्टि और स्रष्टि के विधान और विधाता से जुड़ने व उसे समझने और अन्तर्नहित अकुलाहल और अबोधगम्य छटपटाहट भी है। देश और काल की सीमा रेखा से परे अनिर्वचनीय सत्य का वह रहस्यमय संसार, जो इस भौतिक जगत के क्रियाकलापों का नियमन, नियंत्रण व निर्देशन करता है,

उसे जानने की जिज्ञासा और न जान पाने की निराशा के बीच लघु मानव का मन, हृदय और मस्तिष्क जिन अनुभूतियों से गुजरता है, जिस वैचारिकी का प्रणयन करता है और लोक व्यवहार के जिन नियमों का निर्माण करता है, वे शाश्वत, सनातन व चिरंतन न होने के बावजूद सामयिक सत्य को परिभाषित अवश्य करते हैं और उनके आलोक में मनुष्य अपने लघु जीवन पथ की यात्रा भलीभाँति पूरी कर लेता है। ये गजलें ऐसी ही अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं, ऐसी ही वैचारिकी का प्रणयन हैं और ऐसे ही जीवन सूत्रों का निर्माण हैं।

प्रथमदृष्टया जीवन व जगत का कोई प्रयोजन प्रतीत नहीं होता और यदि कोई प्रयोजन है भी तो वह जीवन और जगत के प्रणेता को ही पता होगा, किन्तु इस जीवन को जीने की सरलता व सुगमता के लिए मनुष्य सृष्टि व स्रष्टि के संघर्ष पर अपनी सम्भावित भूमिका का आकलन करता है, उस भूमिका के लिए स्वयं को तैयार करता है और वह भूमिका प्राप्त हो जाने पर स्रष्टि से समायोजन कायम करते हुए उस भूमिका का निर्वहन करता है।

आवश्यक नहीं है कि यह आकलन, तैयारी व निर्वहन मनुष्य की अन्तर्नहित क्षमताओं के अनुकूल हो और स्रष्टि के साथ समायोजन की समस्या तो है ही। जहाँ यह अनुकूलन व समायोजन विद्यमान है, वहाँ सिद्धि का सुख व प्रसिद्धि का परिपोष दृष्टिगोचर होता है, किन्तु दुर्भाग्यवश

जहाँ वे दोनों तत्व नहीं हैं, वहाँ मनुष्य कुण्ठा, निराशा, हाताशा व अवसाद से भर जाता है और उसे जीवन निष्फल व निष्प्रयोजन दिखने लगता है। कई बार ऐसा भी होता है कि सिद्धि व प्रसिद्धि के बावजूद मनुष्य सुख व आनन्द से वंचित ही रहता है। इसी लिए जीवन व जगत के नियम हर स्थिति व परिस्थिति के लिए पूर्ण व पर्याप्त प्रतीत नहीं होते। इसके बावजूद इन नियमों के निर्माण की दिशा में साहिल के प्रयास प्रशंसनीय हैं। एक बानगी दृष्टव्य है-

बन्ध में तू बात अपनी रब मगर  
हो सलीके मन्द वो गुफ्तार कर।

जीवन पथ पर चलने के लिए मनुष्य को साथी एवं सहचर की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता की प्रतिपूर्ति कुछ हद तक माता, पिता, भाई, बहिन, परिवार, सम्बन्धी, पड़ोसी, शिक्षक व सहपाठी इत्यादि से होती है किन्तु एक अनन्य एवं अन्तरंग सम्बन्ध की उल्लेख व अदृश्य आकांक्षा एवं अभिलाषा हर मनुष्य के अन्तरगत है अन्तर्नहित होती है जहाँ असीम प्रेम हो, एकात्मिक सम्पर्ण हो, अनवरत मुख व मौन संवाद हो तथा कुछ भी गोपन न रहे। वस्तुतः यह आकांक्षा भी एक मृगमरीचिका ही है, क्योंकि दो भिन्न अस्तित्वों के मध्य विलयन जैसा यह सुसमायोजन कभी कभी तो संभव है पर सदा और सर्वदा नहीं। इसी लिए

हर प्रेमकथा में विरह के और हर प्रणय प्रसंग में पार्थक्य के स्वर भी समाहित होते हैं। साहिल की निम्नलिखित पंक्ति में यह स्वर अत्यन्त मुखरता व प्रखरता के साथ अभिव्यक्त हुआ है :-

नहीं अब नाम तक भी याद उनका कभी सब कुछ हमारे जो रहे हैं।

बोते हुए जमाने के पानीदार एवं पायेदार लोगों की तहजीब और तमीज के सामने साहिल खुद को और इस जमाने के दौरा लोगों को बौना ही समझते हैं, तभी तो वे कह सकते हैं :-

बात मुझ में भी कुछ तो है लेकिन वो कहीं जो थी बाप दादों में।

साहिल पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के सहयोगी और अनुयायी रहे हैं। चन्द्रशेखर के प्रति उनके मन का श्रद्धा भाव इस किताब के इतिहास में मुखरित होता है। यह इतिहासही भारतीय संविधान की प्रस्तावना की तरह इस किताब के बारे में, इसके प्रणेता के बारे में, उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि के बारे में, उनके प्रेरणा स्रोत के बारे में और उनके सपनों के भारत के बारे में अत्यन्त संक्षेप में सबकुछ कह देता है। उनके दिल और दिमाग में चन्द्रशेखर ही रहे होंगे जब उन्होंने यह लिखा होगा :-

कुछ लोगों का मस्तक छूकर  
हो जाती है चन्दन मिट्टी।

इस महान देश की परम्परा विद्वता और वीरता के साथ विनम्रता की रही है। हमारी मान्यता है कि परम पिता

परमात्मा ने ही जीवन और जगत के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त किया है, इसलिए हम हर पेड़, पहाड़, नदी, समन्दर, जीव और जन्तु के सामने उसमें अन्तर्नहित दिव्यता की वजह से झुकते आये हैं। हमारा यह भी मानना है कि कोई विचारक, चिंतक, विचारक, दार्शनिक, शासक, प्रशासक, सेनापति, वैज्ञानिक, कवि या लेखक इतिहास का आखिर आदमी नहीं होता। यह धरती रत्नगर्भा और रत्नप्रसूता है। जब तक यह सृष्टि रहेगी, एक से एक विद्वान, बुद्धिमान व बलवान लोग इस धरती पर अवतरित होते रहेंगे और अपनी प्रतिभा व पराक्रम से इसे चमत्कृत व गौरवान्वित करते रहेंगे। इसलिए भारतीय परम्परा में विद्वता और वीरता के ऊपर विनम्रता को प्रतिष्ठित किया गया है। शील शक्ति सौन्दर्य समन्वित भगवान राम के गुणों में भी शील को प्राथमिकता प्रदान की गई है। इसलिए साहिल जब ये कहते हैं कि "फकत आता है साहिल तुक मिलाता, नहीं कुछ भी तो तेरी शाइरी में" तो इसे हम उनकी विनम्रता की अभिव्यक्ति ही मान सकते हैं क्योंकि वे भारतीय परम्परा में रचे बसे व्यक्ति हैं। हमारी तो उनको लिए उन्हीं के शब्दों में यह कामना है -

दोस्तों ये तुक मिलाना, ये तरसूम फिर कहीं,  
बाद मेरे ये जमाना, सोचता रह जायेगा।

-राजेश्वर सिंह  
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

## पुष्कर को अयोध्या और काशी की तर्ज पर विकसित किया जाएगा : दिया कुमारी

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने शिरकत की



उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन समारोह में पुरस्कार दिये।



पुष्कर मेला समापन समारोह के दौरान रस्सा कस्सी, मटका दौड़, चम्मच रेस सहित कई रंगारंग कार्यक्रम आयोजित हुये।

अजमेर, (कासं) उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने कहा कि तीर्थराज पुष्कर को अयोध्या और काशी की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय श्री पुष्कर पशु मेला प्रतिवर्ष पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित होगा, केन्द्र व राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से राजस्थान अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अग्रणी होगा। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शुक्रवार को अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित किया।

उन्होंने कहा कि तीर्थराज पुष्कर का पूरे विश्व में विशिष्ट महत्व है। जगत्पति ब्रह्मा की नगरी पुष्कर करोड़ों में आए हैं। देश के प्रत्येक व्यक्ति की भावना पुष्कर से जुड़ी हुई है। मेले और पुष्कर विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने कहा कि पुष्कर मेले का इतना प्रचार-प्रसार किया जाएगा कि भारत आने वाला व्यक्ति पुष्कर आने की इच्छा रखे। यहाँ संसाधन भी उसी अनुरूप विकसित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार देश और राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए पूरी गंभीरता से काम कर रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राज्य सरकार राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए मिल कर काम कर रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए बजट में 5 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया

लोगों की आस्था का केन्द्र है। राज्य सरकार पुष्कर के विकास के लिए पूरी गंभीरता के साथ काम कर रही है। पुष्कर का विकास अयोध्या एवं काशी की तर्ज पर सुविधायित्व तरीके से किया जाएगा। पुष्कर विकास की बड़ी रूपरेखा तैयार कर कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस साल 6 लाख से अधिक देशी-विदेशी पर्यटक व श्रद्धालुओं ने मेले में भाग लिया है। वर्ष 2019 के बाद पहली बार इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु मेले में आए हैं। पर्यटन और धार्मिक दृष्टि से हर साल मेले को पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा। इसके लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे। इस साल 20 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया

में आए हैं। देश के प्रत्येक व्यक्ति की भावना पुष्कर से जुड़ी हुई है। मेले और पुष्कर विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने कहा कि पुष्कर मेले का इतना प्रचार-प्रसार किया जाएगा कि भारत आने वाला व्यक्ति पुष्कर आने की इच्छा रखे। यहाँ संसाधन भी उसी अनुरूप विकसित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार देश और राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए पूरी गंभीरता से काम कर रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राज्य सरकार राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए मिल कर काम कर रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए बजट में 5 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया

है। राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी बनाएंगे।

जल संसाधन मंत्री एवं पुष्कर विधायक सुरेश रावत ने कहा कि पुष्कर मेले को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति है। इस बार मेला पूरी तरह सफल रहा है। जगतपिता ब्रह्मा की नगरी तीर्थराज पुष्कर का भव्य विकास किया जाएगा। उन्होंने मेले के सफल आयोजन पर सभी को बधाई दी। रावत ने कहा कि पुष्कर का सुविधायित्व विकास किया जा रहा है। सभी को साथ लेकर समन्वित रूप से विकास कार्य कराया जाएगा। इससे पूर्व मेले में रस्साकस्सी, मटका दौड़, चम्मच रेस और लोक नृत्यों की शानदान प्रस्तुतियां दी गईं। अतिथियों ने विजेताओं को पुरस्कृत

■ 'पर्यटन और धार्मिक दृष्टि से हर साल मेले को पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा, इसके लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे'

किया। इस अवसर पर मसूदा विधायक वीरेंद्र सिंह कानावत, नगर परिषद सभापति कमल पाठक, जिला कलक्टर लोक बन्धु, पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर गजेन्द्र सिंह राठौड़, ज्योति ककवाणी सहित प्रशासनिक अधिकारी व जन प्रतिनिधि उपस्थित थे।

## हाईकोर्ट ने एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज मामले में फैसला सुनाया

जोधपुर, (कासं) राजस्थान हाईकोर्ट ने एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज मामलों में बड़ा फैसला सुनाया है। फैसले में हाईकोर्ट ने इस एक्ट से चार जाति सूचक शब्दों को हटा दिया गया है। हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा- भंगी, नीच, भिखारी, मंगनी जैसे शब्द जातिसूचक नहीं हैं। मामला अतिरक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान विभाग के कार्यों में बहस से जुड़ा है, जिसके बाद मामला कोर्ट पहुंचा कोर्ट में सुनवाई करते हुए इन शब्दों का इस्तेमाल करने वाले 4 आरोपियों के खिलाफ एससी/एसटी एक्ट की धाराओं को हटा दिया। जस्टिस वीरेंद्र कुमार की बैच ने यह फैसला सुनाया है। हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए एससी-एसटी एक्ट की धाराओं से बरी कर दिया है।

■ फैसले में हाईकोर्ट ने इस एक्ट से चार जाति सूचक शब्दों को हटाया

■ हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि भंगी, नीच, भिखारी, मंगनी जैसे शब्द जातिसूचक नहीं हैं

गया था। घटनाक्रम 31 जनवरी 2011 का है। हरीश चंद्र अन्य अधिकारियों के साथ अतिरक्रमण अचल सिंह द्वारा किए गए अतिरक्रमण की जांच करने गए थे जब वे साइट का नाप कर रहे थे, तब अचल सिंह ने सरकारी अधिकारी हरीश चंद्र को अपशब्द जिनमें (भंगी, नीच, भिखारी और मंगनी) आदि शब्द कहे। इस दौरान हाथापाई भी हुई। इस पर सरकारी अधिकारी की ओर से अचल सिंह के खिलाफ एससी-एसटी एक्ट का मामला कोतवाली थाने में दर्ज कराया गया था। इस मामले में चार लोगों पर आरोप लगाए गए थे। इन चारों ने एससी-एसटी एक्ट के तहत लगे आरोप

वारे में जानकारी नहीं थी। इसके कोई सबूत भी नहीं मिले हैं कि ऐसे शब्द बोले गए और ये घटना भी जस्ता के बीच हुई हो। ऐसे में पुलिस की जांच में जातिसूचक शब्दों से अपमानित करने का आरोप सच नहीं माना गया। ऐसे में हाईकोर्ट ने आदेश दिए कि भंगी, नीच, मंगनी और भिखारी शब्द जातिसूचक नहीं हैं और यह एससी/एसटी एक्ट में शामिल नहीं होगा। ऐसे में जातिसूचक शब्दों के आरोप के मामले में अपीलकर्ता को बरी किया लेकिन ड्यूटी करने वाले अधिकारियों को रोकना नहीं है इस पर कार्रवाई नहीं रहेगी। कोर्ट के अनुसार यह शब्द जातिसूचक नहीं हैं। सुनवाई के दौरान जातिसूचक शब्दों के बकील ने तर्क दिया कि गालियां प्रतीवादी को अपमानित करने के इरादे से नहीं बल्कि अनुचित भाप के लिए दी गईं। जांचकारता का कार्य सरकारी कर्मचारियों द्वारा गलत तरीके से किए जा रहे माप के विरोध में था।

## सरप्लस शिक्षकों और कर्मिकों का समायोजन होगा

बीकानेर, (निसं) राज्य के विभिन्न स्कूलों में सरप्लस चल रहे शिक्षकों और कर्मिकों का समायोजन 12 दिसंबर से प्रस्तावित अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पहले होगा। राज्य में स्कूल क्रमोत्तर होने और महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम में बदलाव होने से अनेक शिक्षक अधिशेष चल रहे हैं। इन शिक्षकों का रिक्त पदों पर समायोजन किया जाएगा। माध्यमिक एवं प्रारंभिक दोनों शिक्षा निदेशकों ने संयुक्त हस्ताक्षर से सरप्लस शिक्षकों के समायोजन के लिए 30 विंदुओं की गाइडलाइन और कैलेंडर घोषित कर दिया है। गाइडलाइन के मुताबिक सरप्लस शिक्षकों का समायोजन पास के स्कूल में किया जाएगा। वहीं, अंग्रेजी माध्यम स्कूल और नव क्रमोत्तर सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में जहां अभी तक पद स्वीकृत नहीं हुए हैं वहां भी स्टाफिंग पैटर्न से पद मानकर अधिशेष शिक्षकों को समायोजित किया जा सकेगा। समायोजन के लिए शिक्षा निदेशालय ने टाइम फ्रेम भी घोषित कर दिया है।